1

ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
साप्ताहिक
आर्य सन्देश
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

विश्वा ह्यग्ने दुरिता तर त्वम्।
सामवेद 1325
हे प्रकाशस्वरूप प्रभो ! आप हमें सब पापाचारणों से आवश्य दूर करें।
O the luminous Lord ! kindly lead us away from all evil & sinful deeds.

वर्ष 40, अंक 3 एक प्रति : 5 रुपये
सोमवार 14 नवम्बर, 2016 से रविवार 20 नवम्बर, 2016
विक्रमी सम्वत् 2073 सृष्टि सम्वत् 1960853117
दयानन्दाब्द : 193 वार्षिक शुल्क : 250 रुपये पृष्ठ 8
फैक्स : 23365959 ई-मेल : aryasabha@yahoo.com
इंटरनेट पर पढ़ें – www.thearyasamaj.org/aryasandesh

स्वार्थ में पलता देश और विश्वासघात

– प्रकाश आर्य

किसी शायर ने ठीक ही लिखा है कि 'घर को आग लग गई घर के चिराग से' तरस आता है उन स्वार्थ में लिप्त तथाकथित नेताओं की सोच पर और चिन्ता होती है देश की जनता पर जो मूकदर्शक बन बैठकर सब कुछ देखती है। सत्य और असत्य की पहचान जिन्हें नहीं है। दोनों स्थिति में कोई प्रतिक्रिया सामने नहीं आती है इससे यही सिद्ध होता है कि राष्ट्र के प्रति उन्हें कोई चिन्ता नहीं, कोई जागरूकता नहीं।

आज देश की सीमाएं असुरक्षित हो रही हैं देश की सीमा पर बसे हुए ग्राम व शहर असुरक्षित व भय के साये में जी रहे हैं। हजारों परिवार अपना घर मवेशी सम्पत्ति छोड़कर जीवन बचाने हेतु पलायन कर रहे हैं। देश की सुरक्षा में तैनात हमारे वीर जवान अपनी शहादत देकर भी देश रक्षा में जुटे हैं।

पाकिस्तान, चीन सामने खड़े हैं मौका तलाश रहे हैं देश की आन्तरिक व्यवस्था को कमजोर करने में लगे हुए हैं, जम्मू-कश्मीर में पूर्ण प्रयास से हिन्सा व अराजकता को बढ़ावा दे रहे हैं। कभी भी किसी वक्त बड़ी घटना घटित होने की संभावना है, युद्ध भी हो सकता है, यह भी सम्भावित है। यह सब भारत के विरुद्ध हो रहा है भारतवासियों के विरुद्ध हो रहा है। किसी पार्टी या जातीय संगठन अथवा समाज के किसी वर्ग विशेष तक यह सीमित नहीं है। देश को होने वाली क्षति का खामियाजा प्रत्येक नागरिक को भोगना होगा।

> *.....विपरीत परिस्थिति में हमारे देश के कुछ बेशर्म कुर्सी के भूखे भेड़िये वह सम्बल व आत्मविश्वास तोड़ने में लगे हैं। उनका यह शर्मनाक कृत्य जहां एक ओर हमारी शक्ति को मानसिकता को क्षति पहुंचा रहा है, वहीं प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष रूप से दुश्मनों को भी मदद पहुंचा रहा है।........यह सही है कि भारत का प्रत्येक मुसलमान राष्ट्र विरोधी नहीं है वह किसी राष्ट्र विरोधी गतिविधियों से सम्बन्ध नहीं रखता है, राष्ट्र के साथ भी कुछ को छोड़कर अन्य सहयोगी हैं वे भारतीय संविधान को भी मानते हैं। किन्तु दूसरी ओर यह भी सत्य है कि जितने भी आतंकवादी, अलगाववादी हैं वे सब कट्टर मुस्लिम ही हैं।......*

इस समय देश को एक संगठित शक्ति की आवश्यकता है। इसकी सुरक्षा और सहयोग करने की प्रत्येक भारतीय की नैतिक जवाबदारी है। बाहरी दुश्मन को तभी शिकस्त दी जा सकती है जब हमारे घर की स्थिति सुदृढ़ हो, हमारे सैनिकों का, हमारी सरकार की योजनाओं का पूर्ण समर्थन व सम्बल मिले।

किन्तु इस विपरीत परिस्थिति में हमारे देश के कुछ बेशर्म कुर्सी के भूखे भेड़िये वह सम्बल व आत्मविश्वास तोड़ने में लगे हैं। उनका यह शर्मनाक कृत्य जहां एक ओर हमारी शक्ति को मानसिकता को क्षति पहुंचा रहा है, वहीं प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष रूप से दुश्मनों को भी मदद पहुंचा रहा है। वीर जवानों ने सर्जिकल स्ट्राईक करके ऐतिहासिक कार्य किया, यह दुश्मन को एक कड़ी नसीहत थी, पूरे देश का सम्मान और आत्मविश्वास बढ़ा, किन्तु कितना दुर्भाग्यपूर्ण है कि हम उसका प्रमाण मांगने लगे, वीरता के इस अदम्य उत्साह के कार्य पर अपनी निम्नस्तर मानसिकता का परिचय देकर उस पर प्रश्न चिन्ह लगाने लगे। भोपाल जेल से खूंखार आतंकवादी सीमी के वे भी सदस्य जो खण्डवा जेल से भागने के दोषी थे पुनः पुलिसकर्मी की हत्या करके भोपाल जेल से फरार हो गए। क्या अभी भी उनके आपराधिक चरित्र व भावी योजना पर कोई शक रह जाता है? पुलिस पर फायरिंग करते हैं, पास से खतरनाक हथियार बरामद होते हैं। किन्तु फिर भी उनके प्रति सहानुभूति दर्शाते हुए चन्द वोटों की खातिर शासन, प्रशासन पर ही प्रश्न चिन्ह लगा रहे हैं।

– शेष पृष्ठ 4 पर

नेपाल में बढ़ते आर्यसमाज के कदम और अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन

पूर्व घोषणा के अनुसार अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन दिनांक 20 से 22 अक्टूबर 2016 को नेपाल की राजधानी काठमाण्डू में सम्पन्न हुआ।

कार्यक्रम शहर का प्रमुख स्थल नेपाल सेना के विशाल ग्राउण्ड टुंडीखेल पर आयोजित किया गया।

नेपाल में कार्यक्रम का आयोजन होना आर्यो की एक कड़ी परीक्षा व असंभव सा था। सबसे बड़ी कठिनाई का कारण कुछ माह पूर्व प्राकृतिक आपदा (भूकम्प) ने बहुत बड़ी समस्या खड़ी कर दी थी। आर्थिक संकट तो था ही परन्तु इसके अतिरिक्त हजारों व्यक्तियों के रहने, आने-जाने, खाने व सम्मेलन हेतु साधनों की समस्या थी।

दस हजार व्यक्तियों की उपस्थिति का लक्ष्य लेकर चले थे किन्तु उसमें परिवर्तन कर उसे 6 से 7 हजार तक निश्चित किया।

परमात्मा की महती कृपा और नेपाल के आर्यजनों ने सार्वदेशिक सभा के अथक प्रयत्न व पुरुषार्थ ने असंभव को संभव कर पुनः आर्यों के संघर्षशील इतिहास को दोहरा दिया हजारों-हजारों आँखों के साथ ही इतिहास इसका साक्षी बन गया।

स्वामी सम्पूर्णानन्द द्वारा निरन्तर एक माह का चतुर्वेद पारायण यज्ञ नेपाल के दूरदराज दुर्गम स्थल पर सम्मेलन के 4 माह पूर्व किया गया था। इस यज्ञ के साथ-साथ अनेक रहवासी मकान उस स्थान पर जहां भूकम्प ने तबाही मचा दी थी, वहां करवाया गया। इससे अनेक व्यक्ति जो कभी आर्य समाज के नाम से भी परिचित नहीं थे वे आर्य समाज से जुड़े उनका बड़ा सहयोग इस सम्मेलन को मिला।

कार्यक्रम : स्थल पर विशाल आकर्षक और भव्य पण्डाल अति सुन्दर, मनमोहक यज्ञशाला का, भोजन शाला का लगभग 2 से 3 हैक्टेयर भूमि पर किया गया था। यज्ञशाला, पाण्डाल और मंच सभी को आकर्षित कर रहे थे, यह नेपाल की दृष्टि से अकल्पनीय थे।

बाहर से आने वाले जिनमें भारत, मॉरिशस, अमेरिका, बांग्ला देश, न्यूजीलैण्ड, हालैण्ड, सूरीनाम, आदि 10 देशों से तथा स्थानीय आर्यजन 19 की शाम तक काठमाण्डू हजारों की संख्या में पहुंच रहे थे। भारत से सबसे अधिक लगभग पौने तीन हजार व्यक्तियों ने भाग लिया।

कार्यक्रम 20 अक्टूबर 2016 को प्रातः 5 बजे से 6 तक योग आसन प्राणायाम शिविर व उसके पश्चात विशाल शोभायात्रा निकाली गई, जिसमें हजारों की उपस्थिति थी।

प्रतिदिन प्रातः-सायंकाल यज्ञ किया गया। यज्ञ की ब्रह्मा पाणिनी महाविद्यालय बनारस एवं देहरादून से गुरूकुल की आचार्या संजीवनी एवं अन्नपूर्णा जी तथा ब्रह्मचारिणियां थी। यज्ञ में बैठने वालों की संख्या निश्चित स्थानों से कई अधिक थी, बड़ा उत्साह रहता और यज्ञ में भी बड़ी संख्या में उपस्थिति रहती।

ध्वजारोहण : यज्ञ के पश्चात् ओ३म् ध्वजा रोहण माननीय महाशय धर्मपालजी एवं सार्वदेशिक सभा प्रधान माननीय सुरेशचन्द्र जी आर्य के माध्यम से सम्पन्न हुआ।

– शेष पृष्ठ 5 पर

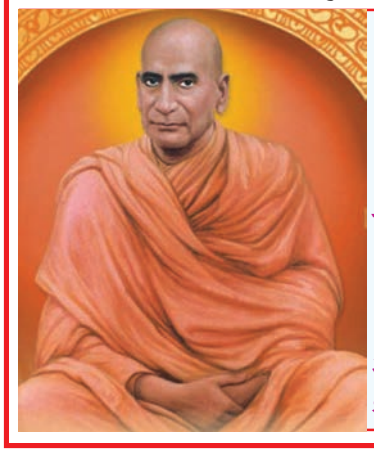

अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द जी के
90वें बलिदान दिवस पर भव्य शोभायात्रा एवं जनसभा
रविवार 25 दिसम्बर, 2016
यज्ञ : प्रातः 8 बजे : शोभायात्रा प्रारम्भ : प्रातः 10 बजे बलिदान भवन से
विशाल सार्वजनिक सभा
रामलीला मैदान, नई दिल्ली : दोपहर : 1 बजे से सायं 4 बजे
आर्यजन अभी से तैयारी आरम्भ करें और अधिकाधिक संख्या में स्वामी जी को श्रद्धांजलि देने हेतु पहुंचें। निवेदक :- आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली

वेद-स्वाध्याय

जागते रहो

यो जागारः तमृचः कामयन्ते यो जागार तमु सामानि यन्ति।
यो जागार तमयं सोम आह तवाहमस्मि सख्ये न्योकाः।। -ऋ. 5/44/14
ऋषिः अवत्सारः काश्यपः।। देवताः विश्वेदेवाः।। छन्दः विराट्त्रिष्टुप्।।

शब्दार्थ - **यः जागार**=जो जागता है **तम्**=उसे **ऋचः**=ऋचाएँ, स्तुतियाँ **कामयन्ते**=चाहती हैं, **यः जागार**=जो जागता है **तं उ**=उसे ही **सामानि**=साम, स्तुतिगान **यन्ति**=प्राप्त होते हैं और **यः जागार**= जो जागता है **तम्**=उसे, उसके सामने आकर **अयम्**=यह **सोमः**=सोम, भोग्य-संसार **आह**=कहता है कि "**तव अहं अस्मि**= मैं तेरा हूँ, **सख्ये न्योकाः**= तेरी मित्रता में ही मेरा निवास है, तेरे सख्य के लिए मैं सदा नियत स्थान पर उपस्थित हूँ।"

विनय-संसार में पूरिपूर्ण जाग्रत् तो एक ही है; वह अग्नि=परमात्मा है। यह सर्वथा अनिद्र है, त्रिकाल में जाग्रत् है। उसमें तमोगुण का (अज्ञान व आलस्य का) स्पर्श तक नहीं हैं। अतएव सब ऋचाएँ, संसार की सब स्तुतियाँ, उसी को चाह रही हैं उसके प्रति हो रही हैं। सब सामों का, मनुष्यों के किये सब यशोगानों का, सब स्तुति-गीतियों का भाजन भी वही एक परम-जाग्रत् देव हो रहा है और देखो, यह समस्त भोग्य-संसार-भोग्य बना हुआ यह सोमरूप ब्रह्माण्ड-उसी जागरूक अग्निदेव के पैरों में पड़ा हुआ कह रहा है "मैं तेरा हूँ, तेरे ही आश्रय से मेरी सत्ता है, तेरी मित्रता में मेरा निवास हो रहा है; तुझसे हटकर मुझे और कहीं ठौर नहीं है।"

इसी प्रकार हम मनुष्य-जीव भी यदि अपनी शक्तिभर सदा जाग्रत् रहेंगे, सदा सावधान और कटिबद्ध रहेंगे, तमोगुण को दूर हटाकर सदा चैतन्ययुक्त, अतन्द्र रहेंगे, आलस्य के कभी भी वशीभूत न होकर अपने कर्त्तव्य को तत्क्षण करने के लिए सदा तैयार, उद्यत रहेंगे, कभी प्रमाद न करते हुए-बिना भूलचूक के-अपने कर्त्तव्य को ठीक-ठीक करते जाने के अभ्यासी हो जाएँगे, तो हम भी उतने ही अंश में 'अग्नि'- रूप हो जाएँगे।

परन्तु वास्तविक भोक्ता होना आसान नहीं। संसार के विषयी पुरुष तो भोगों के भोक्ता होने के स्थान पर भोगों के भोग्य बने हुए हैं, परन्तु वही ऐश्वर्य, वही सुख, वही सुखभोग, जिसके पीछे यह सब संसार दौड़ता फिरता है, परन्तु लोगों को मिलता नहीं, वही ऐश्वर्य (सोम)-जाग्रत् पुरुष के सामने हाथ बाँधकर, सेवक होकर, शरण पाने के लिए आ खड़ा होता है। अग्नित्व को प्राप्त उस मनुष्य के लिए वास्तव में संसार के सब भोग्यपदार्थ उसकी मित्रता में, उसके हितसाधन के निमित्त, सदा नियत स्थान पर उपस्थित रहते हैं; उसे उनपर ऐसा प्रभुत्व प्राप्त हो जाता है, अतः हे मनुष्यो! जागो, जागो, सदा जाग्रत् रहो! तामसिकता त्यागो और निरालस्य-जीवन का अभ्यास करो! जागरूकों के लिए ही यह संसार है; स्तुत्यता, लोकमान्यता, यश, भोक्तृत्व यह सब जागते रहनेवाले के ही लिए है।

- साभार : वैदिक विनय

वैदिक विनय : यह पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।

सम्पादकीय

वरना, मैं हिन्दू बन जाऊँगी!

चित का फटना और फटने का दर्द भीतर ही भीतर सहना कितना कठिन है? पर यह इस नारी की सहनशक्ति का प्रमाण भी है। कुप्रथाएं किसी भी समाज में हो वह हमेशा किसी न किसी के लिए दुःख का कारण जरूर बनती हैं। बल्कि कई बार तो कईयों की जिन्दगी तक को तबाह तक कर डालती है। एक ऐसी ही कहानी कई रोज पहले एक समाचार पत्र में पढ़ने को मिली। खबर थी कि तीन तलाक और हलाला के नियम से दुखी एक मुस्लिम महिला ने इस्लाम छोड़कर हिन्दू धर्म को अपनाने का एलान किया है। उसने इस्लाम धर्म के नाम पर हो रही महिलाओं की दुर्दशा पर खुलकर अपने उद्‌गार व्यक्त किए।

राजनगर (गाजियाबाद) स्थित आर्य समाज मंदिर में 25 वर्षीय मुस्लिम महिला शबनम (बदला हुआ नाम) ने इस्लाम धर्म के नाम पर महिलाओं पर हो रहे अत्याचारों का जिक्र करते हुए कहा कि लगभग सभी मुस्लिम महिलाएं किसी न किसी प्रकार से यातनाएं झेल रही हैं। कम उम्र में उनका निकाह कर दिया जाता है, फिर उन पर जल्दी-जल्दी बच्चे पैदा करने का दबाव दिया जाता है। बच्चा न पैदा होने पर उन्हें तमाम शारीरिक यातनाएं दी जाती हैं और छोटी-छोटी बातों पर तलाक दे दिया जाता है। तलाक देने के बाद महिलाओं की स्थिति और भी दुखदायी हो जाती है। पीड़ित लड़की का कहना है कि तलाक के बाद शौहर से दोबारा निकाह करने के लिए मुस्लिम समाज द्वारा चलाई गई प्रथा हलाला से गुजरना होता है। उसने बताया कि तलाक के बाद उसके शौहर ने फिर से साथ रहने के लिए उसका हलाला भी कराया और दोस्त के हवाले कर दिया। तीन महीने बाद जब वह पति के पास पहुंची तो उसे स्वीकार करने के बजाय पति ने वैश्यावृत्ति में धकेल दिया। हो सकता है इस खबर को पढ़कर धर्म विशेष के लोगों की नजरें शर्म से झुक जायें या शायद कुछ ऐसे भी हों जो परम्पराओं के नाम पर एक नारी के मन और आत्मा को छलनी कर देने वाले इस प्रकरण को मजहब का हवाला देकर सही ठहराएं? किन्तु कहीं न कहीं पूरे प्रकरण में मानवता जरूर शर्मसार हुई है।

एक महिला की घुटन भरी जिन्दगी। जिसके साथ ऐसी घटना घटित होती है उसकी जिन्दगी घर के अन्धेरे कोनों में सुबक कर रोने में ही बीत जाती है। कोई एक भी तो उसकी नहीं सुनता उसकी सिसकियों भरी आवाज। न घर में, न घर के बाहर, न भाई, न पिता, न मस्जिद, न मुल्ला मौलवी, न नेता, न समाज सुधारक सब के सब मौन। कोई भी तो मौलवी ऐसी घटना के विरुद्ध फतवा जारी नहीं करता। जिस कारण पाशविक धार्मिकता की आड़ में स्त्री तो पुरुष के पांव की जूती, बच्चा पैदा करने वाली मशीन बनाकर परम्पराओं की बलिवेदी पर परवान कर दी जाती है। तलाक शुदा स्त्री का चार पांच बच्चों के साथ जीवन कितना नारकीय बन जाता है यह तो केवल भोगने वाला ही जान सकता है।

जानने वाले जानते हैं कि औरत के तलाक के मांगने के मामले शायद ही कभी सुनने को मिलते हैं। वजह यह है कि उसमें खासा वक्त लगता है। जब महिला को तलाक लेना हो तो उसे एक से दूसरे मौलवी के पास धक्के खाने पड़ते हैं। कभी बरेलवी के पास, कभी दारुल उलूम के पास। वह मौलवी के पास जाती है तो वे तलाक लेने की हजारों वजहें पूछते हैं। जबकि मर्द को कोई वजह नहीं देनी पड़ती। औरत वजह भी बताए तो उसे खारिज कर देते हैं कि ये वजह तो इस काबिल है ही नहीं कि तुम्हें तलाक दिया जाए। मतलब इस्लाम के अन्दर औरत वजह से भी तलाक नहीं दे सकती और पुरुष बेवजह भी तलाक दे सकता है। जिसका जीता-जागता उदाहरण अभी हाल ही में जोधपुर राजस्थान में देखने को मिला था कि किस तरह बीच सड़क पर एक मुस्लिम युवक ने अपनी पत्नी को तलाक दिया! मोरक्को की सामाजिक कार्यकर्ता फातिमा मेर्निसी इस्लाम के इस पुराने तंत्र पर प्रहार करती कहती हैं कि इसमें महिलाओं को महज संस्थानिक व अधिकार में रखने की कवायद की जाती रही है और इसे मजहब के नाम पर पवित्र पाठ का नाम दिया गया है।

आज पूरे मुस्लिम संसार में सब कुछ उलट-पलट हो रहा है। लेकिन कुप्रथाओं पर मुसलमान वही पुराने ढर्रे, उन्हीं पुराने संस्कारों की बेड़ियों में जकड़े हुए हैं। कुछ लोग इसे मजहब से जोड़कर देख रहे हैं तो कुछ महज मुस्लिम मौलानाओं की जिद्द से। पूरे संसार में नारियों के लिए मुक्ति आंदोलन चले और आज वह स्वतंत्रता के मुक्त वातावरण में सांस ले रही हैं। हिन्दुओं ने समय के साथ सती जैसी गन्दी प्रथा को दूर कर नारी को स्वतंत्र कर दिया। किन्तु मुस्लिम समाज की महिलाओं की मुक्ति का एक भी स्वप्न संसार के किसी कोने से उदय होता नहीं दिखता। इस्लामिक समाज में नारी मुक्ति के लिए कोई भी समाज सुधारक, चिन्तक, कोई नेता व कोई भी धार्मिक व्यक्ति आगे नहीं आया। आगे आती सिर्फ कुछ मुस्लिम महिला पर उनकी आवाज उनके चरित्र से जोड़कर बंद कर दी जाती है।

पिछले कुछ सालों से एक तमिल (मुस्लिम लेखिका) मुता विवाह के खिलाफ संघर्ष कर रही है। जब उनसे पूछा कि यह मुता विवाह है क्या? तो उन्होंने बताया केवल थोड़े समय के लिए शादी फिर तलाक तलाक तलाक। अशिक्षा ने हमारे समाज को उजाड़ बना दिया है। तलाक के बाद आंसुओं की सम्पत्ति, चुपचाप सिसकने की इज़ाजत के सिवा कुछ भी नहीं। दुख, वेदना, हताशा व दरिद्रता के सिवाय कुछ नहीं बचता। मिस्र की एक मुस्लिम महिला गदीर अहमद अभी हाल ही में इस्लाम में नारी को लेकर मुखर हैं वह कहती हैं आप अकेली नहीं हैं। आप जिस संघर्ष से गुज़र रही हैं, मैं उससे गुज़र चुकी हूं। मैंने अकेलापन, असहाय, कमजोरी और शर्म को महसूस किया था। ऐसे समय भी आए जब मैं पूरी तरह निढाल हो गई। मुझे यह हक नहीं कि आपसे कह सकूं कि आप भी मेरी तरह ही संघर्ष करें। लेकिन मैं अपील करती हूं कि जिस पर आपको भरोसा हो, चाहे वह कोई भी हो उससे मदद मांगें। एक बार मदद मांगने से आप कम अकेली, कम खतरे में खुद को पाएंगी। हम साथ मिल कर उस संस्कृति को बदल सकते हैं जो हमें डराती है और शर्मिंदा करती है। हम एक साथ जी सकती हैं, बहनों के रूप में हम इस दुनिया को औरतों के लिए बेहतर बना सकती हैं।

- सम्पादक

ओ३म्
भारत में फैले सम्प्रदायों की निष्पक्ष व तार्किक समीक्षा के लिए उत्तम कागज़, मनमोहक जिल्द एवं सुन्दर आकर्षक मुद्रण
(द्वितीय संस्करण से मिलान कर शुद्ध प्रामाणिक संस्करण)
सत्य के प्रचारार्थ
सत्यार्थ प्रकाश
सत्य के प्रचारार्थ

● प्रचार संस्करण (अजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 50 रु.	प्रचारार्थ 30 रु.	प्रचारार्थ मूल्य पर कोई कमीशन नहीं
● विशेष संस्करण (सजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 80 रु.	प्रचारार्थ 50 रु.	
● स्थूलाक्षर सजिल्द 20×30÷8	मुद्रित मूल्य 150 रु.		प्रत्येक प्रति पर 20% कमीशन

10 या 10 से अधिक प्रतियाँ लेने पर विशेष अतिरिक्त कमीशन
कृपया, एक बार सेवा का अवसर अवश्य दें और महर्षि दयानन्द की अनुपम कृति **सत्यार्थ प्रकाश** के प्रचार प्रसार में सहभागी बनें
आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
427, मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6
Ph. :011-43781191, 09650622778
E-mail : aspt.india@gmail.com

हिजाब का ये कैसा खेल?

खबर है कि भारतीय शूटर हिना सिद्धू ने नौवीं एशियाई एयरगन शूटिंग चौंपियनशिप से अपना नाम वापस ले लिया है। ईरान में होने वाली इस चौंपियनशिप में हिजाब पहनने की अनिवार्यता के चलते हिना ने ये कदम उठाया है। यह प्रतियोगिता दिसंबर में ईरान की राजधानी तेहरान में होगी। इस भारतीय खिलाड़ी ने कहा है कि वो ऐसा करने वाली कोई क्रांतिकारी खिलाड़ी नहीं है, लेकिन व्यक्तिगत रूप से उन्हें लगता है कि किसी खिलाड़ी के लिए हिजाब पहनना अनिवार्य करना खेल भावना के लिए ठीक नहीं है। एक खिलाड़ी होने का उन्हें गर्व है क्योंकि अलग-अलग संस्कृति, पृष्ठभूमि, लिंग, विचारधारा और धर्म के लोग बिना किसी पूर्वाग्रह के एक दूसरे से खेलने के लिए आते हैं, खेल मानवीय प्रयासों और प्रदर्शन का प्रतिनिधित्व करता है। न कि किसी धर्म का! यदि यहीं पर रुख दूसरी खबर का करें तो चेचन्या की सरकार ने शादियों पर नज़र रखने के लिए खास अफसरों को तैनात करने का फैसला किया है। ये अफसर शादी के दौरान होने वाले अनुचित व्यवहार रोकेंगे। कार्यकारी सांस्कृतिक मंत्री खोजा-बाऊदी दायेव ने कहा, विशेष कार्यकारी समूह सार्वजनिक जगहों में होने वाली सभी शादियों में शिरकत करेंगे। यदि पोषाकें और नृत्य की भंगिमाएं राष्ट्रीय रीति-रिवाजों और इस्लामिक परंपराओं के खिलाफ हुईं तो शादी रोक दी जाएंगी।

कई बार लगता है कि इस्लाम जीवन शैली से ज्यादा परम्पराओं में बसता है या यूं कहें पुरातन परम्पराओं के बचाव का नाम ही धर्म विशेष रह गया है? सब जानते हैं कि इस्लाम के मानने वालों की एक बहुत बड़ी तादाद कट्टरवादी नहीं है। वहीं कई कट्टरपंथी ऐसे भी हैं जिनका दूसरों का सिर धड़ से अलग करने के काम से कोई वास्ता नहीं है। इसके बावजूद, मुस्लिम सोच में एक ऐसी दिक्कत है जिसके बारे में बात करने से ज्यादातर मुस्लिम बचते हैं। ऐसा नहीं है कि ये सोच केवल मुसलमानों के भीतर ही है, लेकिन आजकल यह उनके बीच खासतौर पर प्रचलित है। इस दिक्कत की एक पहचान यह है कि कई मुसलमान, यहाँ तक कि कुछ धर्मनिरपेक्ष मुस्लिम भी, मुस्लिम संस्कृति और समाज से जुड़ी हर चीज का बचाव करते हैं। इसके लिए आम तौर पर अपने गौरवशाली अतीत की दुहाई दी जाती है, साथ ही वर्तमान समय की परेशानियों के लिए किसी बड़े खलनायक को जिम्मेदार ठहराया जाता है।

.....चेचन्या की सरकार ने शादियों पर नज़र रखने के लिए खास अफसरों को तैनात करने का फैसला किया है। ये अफसर शादी के दौरान होने वाले अनुचित व्यवहार रोकेंगे। कार्यकारी सांस्कृतिक मंत्री खोजा-बाऊदी दायेव ने कहा, विशेष कार्यकारी समूह सार्वजनिक जगहों में होने वाली सभी शादियों में शिरकत करेंगे। यदि पोषाकें और नृत्य की भंगिमाएं राष्ट्रीय रीति-रिवाजों और इस्लामिक परंपराओं के खिलाफ हुईं तो शादी रोक दी जाएंगी।.....

जंग या बहस कोई भी हो विचारधारा को लेकर होती है और ताकतवर लोग हमेशा अपनी विचारधारा को बड़ा रखना चाहते हैं। इन्सान वैसे तो हमेशा वैचारिक स्वतंत्रता का पक्षधर रहा किन्तु समूह में आकर वो हमेशा उस समूह की विचारधारा की सम्मान करने की बात करता है क्योंकि समूह हमेशा संगठन की गरिमा की बात करता है। कुछ समय पहले मैंने बीबीसी की एक रिपोर्ट में पढ़ा था कि फैशनेबल कपड़े पहनने पर एक फलस्तीनी लेखिका ने कुछ पश्चिमी देशों में बुर्का पहनने के विरोध या उस पर प्रतिबंध की कोक्किओं की आलोचना की थी. जबकि वो खुद बुर्का नहीं पहनती थी. लेकिन अपने कई अन्य बुर्का न पहनने वाले साथियों की तरह उन्हें भी लगा कि अपने भाइयों के पक्ष में बोलना उनकी जिम्मेदारी है। उन्होंने तर्क दिया था कि पश्चिमी देश बिकनी पर क्यों नहीं प्रतिबंध लगाते, क्योंकि यह कहा जा सकता है कि बिकनी से भी महिलाओं की उसी तरह एक खास छवि बनती है जैसी कि बुके से। भले भी उस लेखिका की नियत अच्छी थी, लेकिन तर्क बुरा था। कोई भी पश्चिमी देश महिलाओं को बिकनी पहनने के लिए जबरदस्ती जोर नहीं डालता। आप पश्चिम में किसी भी समुद्र तट पर पूरे कपड़े पहनकर घूम सकते हैं! लेकिन कई इस्लामी देश, जैसे कि सऊदी अरब, बुर्का पहनने के लिए बाध्य करते हैं और इसे जबरदस्ती लागू करते हैं। मुझे लगता है कि मुसलमानों को अपने तर्कों और बहानों की पूरी ईमानदारी से जाँच करनी चाहिए।

मुस्लिम लेखिका अय्यान हिरसी कहती हैं कि जमाना तो बदला पर अभी भी इस्लाम में बहुत कुछ नहीं बदला वहीं आधुनिक विवाद की ऐतिहासक जड़ें, इस पुस्तक में लेखिका लैला अहमद कहती हैं इस्लाम में स्त्रीवाद व स्त्री की ये आवरण प्रथा सर्वप्रथम ससानियन समाज में प्रचलित थी जिसे लिंगभेद के लिये इस्तेमाल किया जाता था साथ ही इस आवरण का प्रयोग ईसाई समुदाय में मध्य पूर्व व मेडिटेरियन भागों में, इस्लाम के उदय के समय था। मोहम्मद के जीवनकाल में व उस काल के अंतिम समय में, सिर्फ उनकी पत्नियां जो मुस्लिम थीं इस आवरण में रहती थी उनकी मृत्यु के बाद और मुस्लिम समुदाय की स्थिति के अनुसार, उच्च वर्ग की महिलाएं आवरण में रहने लगी और धीरे-धीरे ये मुस्लिम उच्च वर्ग की महिलाओं का प्रतीक बन गया। आवरण में या बुर्के में रहना, इसे जीवन में मोहम्मद द्वारा प्रचलित नहीं किया गया था वर ये वहां पर पहले से मौजूद था। शायद इसका कारण वहां उड़ता रेत रहा हो। जिसे बाद में सामाजिक प्रतिष्ठा का प्रतीक माना जाने लगा था। जो कि अब बदलते समय में धार्मिक प्रतिष्ठा का सवाल बन गया है। शायद मुस्लिम समाज में, अपनी प्रतिष्ठा व धन प्रदर्शन का मुद्दा बनाकर आवरण को ग्रहण करने की प्रथा धीरे-धीरे मोहम्मद की पत्नियों को अपना आदर्श बनाकर आगे चल पड़ी। वरना हिजाब का कोई भी पर्यायवाची बुर्के या पर्दे से नहीं बल्कि हिजाब का अर्थ सिर्फ शर्म बताया गया है।

सोमालिया की लेखिका इरशद मांझी ने कुछ समय पहले आक्सफोर्ड में मुस्लिम विद्यार्थियों, प्रोफेसरों तथा बुद्धिजीवियों से कहा था कि मुस्लिमों को धमकी और शिकायत का रवैया छोड़कर आत्म अवलोकन और खुले विचार-विमर्श पर उतरना चाहिए यदि मुसलमान भी इसे अपनी कमजोरी मान लें तो यह बड़ा रचनात्मक कदम होगा। यदि मुस्लिम समुदाय अपने वैचारिक स्रोतों के एकमात्र सत्य या त्रुटिहीन होने की जिद्द छोड़ दें तो उसमें विवेकशील चिंतन स्वत: आरम्भ हो जाएगा जब तक मुसलमान अपनी जिद्द ठाने रहेंगे, समस्या बनी रहेगी जो इस्लाम के अथवा मानवता के हित में नहीं होगा। मुस्लिम समाज में सुधारों की आवाज उठाने में मुस्लिम महिलाएं आगे हैं? पाकिस्तान, बांग्लादेश आदि से लेकर ईरान, सऊदी अरब, यूरोप, अमेरिका तक सुधारवादी मुसलमानों के बीच निर्भीक स्वर स्त्रियों का ही है। यह इस्लामी रीति-रिवाजों में पुनर्विचार की जरूरत पर बल देता है। इसलिए अब तसलीमा नसरीन को अपवाद रूप में नहीं लिया जा सकता। उनकी तरह ही अय्यान हिरसी अली, वफा सुल्तान, फेहमिना दुर्रानी, इसरद मांझी, बसमा बिन सऊद आदि की आवाजें मुखर हो रही हैं। अब इन्हें अज्ञानी, इस्लाम विरोधी और अमेरिकी एजेंट कहकर झुठलाया नहीं जा सकता। बसमा तो स्वयं सऊदी राजपरिवार की हैं। आज नहीं तो कल मुस्लिम नेताओं, उलेमाओं और आलिमो को उन पर गंभीर विचार करना ही होगा। धमकी या हिंसा के बल पर या परम्पराओं के रखरखाव के लिए किसी को कब तक चुप किया जा सकता है? **- राजीव चौधरी**

साप्ताहिक आर्य सन्देश में छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक मंडल अथवा दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का सैद्धान्तिक मतैक्य होना आवश्यक नहीं है।

- सम्पादक

बोध कथा

जाल्पी मत बनों!

एक थे पति और पत्नी। नया विवाह हुआ। अलग रहने के लिए एक मकान उन्होंने किराये पर लिया। एक सेठ साहब का मकान था वह। नीचे के भाग में सेठजी स्वयं रहते थे, ऊपर के भाग में यह पति और पत्नी। अपने मकान को उन्होंने कुर्सियों और कौंचों से सजाया; मेज़ों और बत्तियों से सजाया; परदों और कालीनों से सजाया। बहुत प्यार से रहते थे वे। एक दिन सेठ ने सुना कि वे दोनों झगड़ाकर रहे हैं। पत्नी भी ऊँचे-ऊँचे बोल रही थी, पति भी। युद्ध छिड़ गया प्रतीत होता था। सेठ जी पर्याप्त समय तक प्रतीक्षा करते रहे कि झगड़ा समाप्त हो जाए; वह समाप्त नहीं हुआ। आवाज़ के तोपखाने पूरे वेग से चल रहे थे।

सेठ साहब घबराकर ऊपर गए; बोले-''किस बात पर झगड़े जाते हो? तुम तो कभी झगड़ते नहीं थे? तुम्हारे-जैसे अच्छे लोग तो मैंने देखे नहीं। फिर आज क्या हुआ?''

पति ने कहा-''देखिये सेठजी! आप ही इसको कुछ बुद्धि दीजिये। मैं कहता हूँ, हम लड़के को वकील बनायेंगे। आनन्द से रुपया कमायेगा। समय पर कचहरी जायेगा। समय पर वापस आयेगा। यह मूर्खा कहती है कि इसे डॉक्टर बनायेंगे। अब बताइये, डॉक्टर का जीवन भी कोई जीवन है? दिन को शांति न रात्रि को विश्राम। डॉक्टर बनाना तो उससे शत्रुता करना होगा।''

सेठजी ने श्रीमती से पूछा तो वह बोली-''मेरे तो भाग्य खोटे थे, जो इनके पल्ले पड़ी! इन्हें तो रुपयों के अतिरिक्त कुछ सूझता ही नहीं; और फिर डॉक्टर क्या रुपया नहीं कमाते? रुपया भी कमाते हैं, दुनिया की सेवा भी करते हैं। वकील का जीवन क्या है? हर समय झूठ, हर समय चिन्ता! मैं तो लड़के को डॉक्टर ही बनाऊँगी।''

सेठ साहब ने सोचते हुए कहा-'' इसके लिए इतना झगड़ा करने की क्या आवश्यकता है? लड़के से पूछ तो लो! यदि वह डॉक्टर बनना चाहता है तो डॉक्टर बना दो, वकील बनना चाहता है तो कानून पढ़ा दो। आओ! मैं तुम्हारे लड़के को पत्र लिखता हूं, जो कुछ वह कहे, उसे तुम दोनों मान लेना।''

दोनों ने एक-साथ कहा-''परन्तु लड़का तो अभी पैदा ही नहीं हुआ!''

ऐसे लोगों को कहते है।-जल्पी। सूत न कपास, घर में लट्ठम-लट्ठा। ऐसे व्यक्तियों में श्रद्धा नहीं होती। श्रद्धा न हो तो ज्ञान नहीं होता। ज्ञान न हो तो मन को एकाग्रता नहीं मिलती। मन एकाग्र न हो तो ईश्वर नहीं मिलता।

- सभार : बोध कथाएं

बोध कथाएं : वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश प्रेषित करें या मो. नं. 9540040339 पर सम्पर्क करें।

आर्य सभा मॉरीशस के पदाधिकारियों पण्डित-पण्डिताओं का सम्मान एवं भजन संध्या सम्पन्न

नेपाल आर्य महासम्मेलन से दिल्ली लौटी आर्य सभा मॉरीशस की टोली का दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्य समाज जनकपुरी सी-3 के सौर्जन्य से दिनांक 1 नवम्बर 2016 को सम्मान एवं भजन संध्या का कार्यक्रम बड़े ही शानदार तरीके से आर्य समाज जनकपुरी सी-3 के सभागार में आयोजन हुआ। आर्य सभा मॉरीशस से पधारे वरिष्ठ उपप्रधान श्री हरिदेव रामधनी एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामंत्री श्री विनय आर्य ने कार्यक्रम का संचालन किया। मॉरीशस भजन मंडली द्वारा कर्णप्रिय भजनों की रचना व गुरु विरजानन्द संस्कृत कुलम् दिल्ली के आचार्य धनञ्जय शास्त्री जी की तबले पर संगत को सुन सभी मंत्र मुग्ध हो गये। सभा की ओर से मॉरीशस आर्य सभा के सभी पदाधिकारियों एवं पण्डित-पण्डिताओं को पटका व स्मृति चिन्ह देकर दिल्ली की विभिन्न आर्य समाजों से आये पदाधिकारियों द्वारा सम्मानित किया गया। वरिष्ठ उपप्रधान हरिदेव रामधनी जी को आध्यात्म रत्न, श्री श्याम धनेश जी को आध्यात्म रत्न, श्री भरत मंगलू जी हो आतिथ्य सत्कार रत्न, से सम्मानित किया गया। गुरुविरजानन्द संस्कृत कुलम के छोटे-छोटे बच्चों द्वारा 'लकड़ी की काठी, काठी पे घोड़ा' बाल गीत की संस्कृत में प्रस्तुति अति प्रशंसनीय रही। कार्यक्रम के बीच-बीच में श्री विनय आर्य जी द्वारा मॉरीशस के आर्य समाज का इतिहास व वहां की गतिविधियों की जानकारी दी जाती रही। आर्य प्रतिनिधि सभा म्यांमार (वर्मा) माडले से पधारे मंत्री पण्डित चिंतामणि जी ने वर्ष 2017 में वर्मा में होने वाले आर्य महासम्मेन में सभी को आमंत्रित किया। कार्यक्रम के अन्त में जनकपुरी सभा प्रधान श्री शिव कुमार मदान ने सभी का धन्यवाद किया व शान्तिपाठ व भोजन मंत्र के साथ कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। अंतत: भारत माता की जय और मॉरीशस माता की जय के जयकारे से सारा वातावरण गूंज उठा।

आर्य सभा मॉरीशस के प्रतिनिधियों का दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा आर्यसमाज जनकपुरी सी-3 में स्वागत, भजन संध्यां एवं विभिन्न समाजों से पधारे आर्यजन

प्रथम पृष्ठ का शेष

स्वार्थ में पलता देश और .....

हमेशा औचित्यहीन और विवादास्पद बयान देने वाले कांग्रेस के नेता दिग्विजयसिंह का पुन: हास्यास्पद कथन पढ़ा जिसमें उन्होंने कहा कि जेल से हमेशा मुस्लिम कैदी ही क्यों भागते हैं। जहां तक मैं समझता हूं यही रहा है। यह एक साजिश जानबूझकर मुस्लिमों के खिलाफ की जा रही है ऐसा सन्देश व मुस्लिम समुदाय के हितैषी बनते हुए दिया। यद्यपि इस निरर्थक बयान का कोई प्रभाव जन सामान्य पर नहीं हुआ, किन्तु कुछ सरकार विरोधी तत्वों को सरकार को गलत सिद्ध करने का एक और मौका मिल गया।

यह सही है कि भारत का प्रत्येक मुसलमान राष्ट्र विरोधी नहीं है वह किसी राष्ट्र विरोधी गतिविधियों से सम्बन्ध नहीं रखता है, राष्ट्र के साथ भी कुछ को छोड़कर अन्य सहयोगी हैं वे भारतीय संविधान को भी मानते हैं। किन्तु दूसरी ओर यह भी सत्य है कि जितने भी आतंकवादी, अलगाववादी हैं वे सब कट्टर मुस्लिम ही हैं। उसमें आई.एस.आई. अलकायदा, मुजाहिदीन या सीमी आदि सभी अपने को इस्लामिक संगठन ही कहते हैं। तो ऐसे राष्ट्र व समाज विरोधी तत्वों के विरुद्ध कार्यवाही क्या समस्त मुस्लिम समुदाय के विरुद्ध मानी जावेगी?

अभी-अभी सांसद मुनव्वर सलीम के पी ए फरहत को विगत बीस वर्षों से पाकिस्तानी मददगार होने का मामला सामने आया है। फरहत मुस्लिम है तो क्या अब यहां भी दिग्विजयसिंह को यह कहना चाहिए कि क्या मुस्लिम ही राष्ट्र विरोधी गतिविधियों में शामिल हैं?

स्वार्थ में लिप्त नेता कोई मौका अपनी रोटी सेंकने के लिए छोड़ना नहीं चाहते। दिल्ली में एक भूतपूर्व सैनिक की आत्महत्या को लेकर श्री केजरीवाल, श्री राहुल गाँधी के घड़ियाली आंसू बहाने का नाटक टी.वी. पर देखा। एक दु:खद घटना के अवसर पर सांत्वना जताने पहुंचे ये नेता पत्रकारों से हंस-हंस कर सरकार पर व्यंग्य कसते हुए अपना नकली सहानुभूति का भद्दा प्रदर्शन कर रहे थे।

देश भक्ति के स्थान पर कुर्सी भक्ति, पार्टी भक्ति और स्वार्थ पूर्ति में लगे हैं ये देश के नायक नहीं, खलनायक हैं। ऐसे बहुरूपियों ने ही समाज व राष्ट्र के साथ खिलवाड़ कर रहे हैं। राष्ट्र में ऐसे गुमनाम तथाकथित नेताओं का बहिष्कार होना चाहिए, इनके स्वार्थ से भरे चरित्र को समझना चाहिए, समालोचना करना अच्छा है किन्तु ऐसे व्यक्तियों का देश की एकता, सुरक्षा का नहीं बस अपनी पहचान बनाने का, अपना प्रचार करने का ही एकमात्र उद्देश्य है।

समझना चाहिए, हर स्थान पर मात्र सरकार विरोधी वातावरण निर्मित करने में व्यस्त तथाकथित संगठन या नेता, राष्ट्र को कमजोर कर रहे हैं। जो आगे बढ़कर सरकार को सही मार्गदर्शन व सहयोग की आवश्यकता है, आज उसकी टांग पकड़ कर पीछे खींचने का दुष्कर्म हो रहा है। यह देश के साथ विश्वासघात है।

इन नेताओं के अतिरिक्त देश का प्रत्येक वह नागरिक भी दोषी है जो इस देश की माटी पर रहते हुए जी रहा है किन्तु इसके प्रति जागरूक नहीं है। देश प्रेमी और देश द्रोहियों को एक ही स्थान दे रहा है। न सत्य का खुलकर समर्थन करता है न असत्य का विरोध करता है। यह नीति भी हमारी कृतज्ञता, राष्ट्र के प्रति एहसान फरोशी को सिद्ध करती है। क्योंकि हमारा धर्म कहता है ''माताभूमि पुत्रोऽहं पृथिव्या:''

यह भूमि मेरी माँ और मैं इसका पुत्र हूं। इसलिए फिर माँ की रक्षा, सेवा, सहयोग करना प्रत्येक पुत्र का धर्म है।

खजाने को खतरा नहीं चोरों से,
खतरा है पहरेदारों से।
धर्म को खतरा नहीं नास्तिकों से,
खतरा है ठेकेदारों से।
राष्ट्र को खतरा नहीं दुश्मनों से,
खतरा है देश के गद्दारों से।।

- मन्त्री, सार्वदेशिक सभा
इन्दौर रोड, महू (म.प्र.)

केरल जो कभी वैदिक धर्म का केन्द्र था, वहां गत 100 वर्षों में क्या-क्या घटित हुआ, उन सत्य घटनाओं पर आधारित वीर सावरकर जी का प्रामाणिक उपन्यास अवश्य पढ़ें।

'मोपला'

प्राप्त करने के लिए सम्पर्क करें-
वैदिक प्रकाशन
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-1
दूरभाष: 23360150, 9540040339

नवनिर्मित यज्ञशाला, अतिथि कक्ष व वैदिक पुस्तकालय का विधिवत् उद्घाटन

आर्य समाज मन्दिर न्यू मुल्तान नगर दिल्ली में नवनिर्मित यज्ञशाला, अतिथि कक्ष व वैदिक पुस्तकालय का विधिवत् उद्घाटन दिनांक 16 अक्टूबर 2016 को वैदिक परम्पराओं के निष्ठावान महानुभाओं द्वारा सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम में भारत के प्रथम अंतरिक्ष यात्री व पंडित लोकनाथ तर्कवाचस्पति के पौत्र श्री राकेश शर्मा, स्वामी रामदेव, आर्य केन्द्रीय सभा के प्रधान व एम.डी.एच. ग्रुप चेयरमैन महाशय धर्मपाल, आर्य स्व. चौधरी मित्रसेन के सुपुत्र व हरियाणा सरकार के राजस्व मंत्री कैप्टन अभिमन्यु जी, साध्वी माता उत्तमायति एवं डॉ. सुमन आर्या की गरिमामयी उपस्थिति रही। कार्यक्रम का शुभारम्भ चार कुंडीय यज्ञ आदरणीय राकेश शर्मा व उनकी धर्मपत्नी श्रीमती मधु जी समेत सोलह दानवीर दम्पत्तियों द्वारा यज्ञ सम्पन्न हुआ।

युवा भजनोपदेशक भाई सुन्दर पांचाल ने सुन्दर भजनों से समा बांध दी।

-राज कुमार आर्य

पुस्तकालय के उद्घाटन के अवसर पर पुस्तक का लोकार्पण करते स्वामी रामदेव जी। महाशय धर्मपाल जी को स्मृति चिह्न भेंट करते आर्यसमाज के पदाधिकारी।

प्रथम पृष्ठ का शेष

नेपाल में बढ़ते आर्यसमाज के कदम और अन्तर्राष्ट्रीय ....

उद्घाटन : कार्यक्रम का उद्घाटन नेपाल देश की महामहिम राष्ट्रपति श्रीमती विद्यावती भण्डारी के द्वारा दीप प्रज्जलित कर किया गया।

कार्यक्रम विभिन्न देशों से आए एवं काठमाण्डू, नेपाल के प्रमुख अनेक प्रतिष्ठित आर्यजन मंच पर विराजित थे।

सम्मेलन : कार्यक्रम के मध्य युवा सम्मेलन, महिला सम्मेलन, संस्कृत सम्मेलन, शिक्षा सम्मेलन, विशेष रूप से आयोजित थे। इसी मध्य सत्य सनातन वैदिक धर्म की सुरक्षा व प्रगति के लिए विभिन्न वक्ताओं के उद्बोधन होते रहे।

समस्त देशों के प्रतिनिधियों का परिचय एवं व्याख्यान : नेपाल के स्थानीय वक्ताओं के साथ-साथ विभिन्न देशों व भारत वर्ष के प्रत्येक प्रमुखों को आर्य समाज के संगठन को सुदृढ़ व विस्तृत करने हेतु तथा प्रचार-प्रसार के लिए अपने विचार व्यक्त किए। संगठन की दृष्टि से अनेक निर्णय लिए गए।

जिनमें प्रमुख रूप से, नेपाल में वैदिक संस्कृति को पुन: पूर्व सा गौरव प्राप्त करने हेतु प्रयास, संस्कृत विश्व विद्यालय नवयुवकों को स्वावलम्बी बनाने हेतु शासन से मांग, नेपाल में सनातन धर्मियों के षड्यन्त्र पूर्वक हो रहे धर्मान्तरण पर प्रतिबन्ध लगाने हेतु शासन से मांग।

आमन्त्रित विद्वान, वक्ता एवं अतिथिगण : नेपाल का यह सम्मेलन अभूतपूर्व सम्मेलन हुआ, जहां 6000 से अधिक संख्या में आर्यजन एकत्रित हुए, वहीं अनेक राष्ट्रीय स्तर के नेता, विद्वान, वक्ता भी पधारे जिसमें प्रमुख रूप से नेपाल की महामहीम राष्ट्रपति श्रीमती विद्यावती भण्डारी, नेपाल सुप्रीम कोर्ट की मुख्य न्यायाधीश डॉ. सुशीला गार्गी, श्रीमती सपना प्रधान मल्ल (न्यायाधीश सुप्रीम कोर्ट नेपाल), महाशय धर्मपालजी, स्वामी धर्मानन्दजी (उड़ीसा), स्वामी सुमेधानन्दजी (सांसद सीकर), डॉ. सत्यपालसिंहजी (सांसद), योगी आदित्यनाथजी (सांसद), डॉ. स्वामी देवव्रतजी सरस्वती, दिल्ली, सुरेन्द्र कुमार आर्य (जेबीएम), श्री महेश अग्रवाल (अध्यक्ष अग्रवाल सेवा केन्द्र काठमाण्डू), श्री पवन मित्तल (अध्यक्ष नेपाल मारवाड़ी पंचायत), थे।

कार्यक्रम संचालन : विभिन्न कार्यक्रमों के संचालन व संयोजन में भारत व नेपाल के अनेक व्यक्तियों की भूमिका रही जिसमें श्री डॉ. माधव प्रसाद उपाध्याय, सभामन्त्री के दायित्व का निर्वाह करते हुए मैं स्वयं, डॉ. विनय वेदालंकार, श्री अशोक आर्य, श्री विनय आर्य, श्री वाचोनिधि आर्य, श्रीमती शारदाजी (दिल्ली) ने ठहरने और भोजन व्यवस्था को भी बहुत सराहा गया : प्राय: अनुमान से अधिक व्यक्तियों की उपस्थिति में वह भी एकाएक बिना पूर्व सूचना के जब हजारों व्यक्ति किसी से होने वाली परेशानियों का अनुमान लगाया जा सकता है। किन्तु परमात्मा की कृपा से तथा कार्यकर्ताओं की सूझबूझ से कुछ भी किसी भी प्रकार की कोई परेशानी नहीं हुई। जैसे-जैसे जन समूह का सैलाब आता जाता वैसे ही काठमाण्डू के किसी भी कोने में जाकर ठहरने की व्यवस्था की गई। भोजन, नाश्ता, चाय, दूध आदि की व्यवस्था कार्यक्रम स्थल पर रही। जिससे मिले उसी ने व्यवस्था की तारीफ की।

विशेष सहयोग : यह कार्यक्रम अत्यन्त कठिन, विपरीत और आश्चर्य जनक असंभावित स्थिति में हो सका।

इस हेतु भारत से सभा की ओर से 6-7 बार अलग-अलग दृष्टि से जाना हुआ। नेपाल में पहले तो इस आयोजन की मानसिकता ही नहीं बन पा रही थी। इसका प्रमुख कारण जन, धन, व्यवस्था सभी का अभाव था। स्थान का अभाव, ठहराने का अभाव, भोजन व्यवस्था, टेन्ट व्यवस्था, सबकुछ सम्मेलन की दृष्टि से पर्याप्त नहीं। सभा प्रधान श्री सुरेशचन्द्र आर्य सहित अन्य सभी ने उनको विश्वास दिलाया हर प्रकार से सहयोग का आश्वासन दिया, बार-बार सभा की ओर से उत्साहवर्धन चर्चा व विचार विमर्श होता रहा। तब इस कार्यक्रम के प्रति मानसिकता बनी।

भारत से वहां जाकर काठमाण्डू के विभिन्न जातीय एवं सामाजिक संगठनों से भेंट की, इससे कुछ सहयोगी तैयार हुए। अनेक व्यक्तियों से मिलकर साधन जुटाने की, ठहराने की व्यवस्था कई दिन तक की गई।

इसी मध्य सभा प्रधान श्री सुरेशचन्द्र जी का स्वास्थ्य बिगड़ गया, विनय आर्य भी 20-25 दिन चिकन गुनिया की चपेट में आ गए, मध्य भारतीय प्रान्तीय सभा के चुनाव में मुझे कुछ समय देना पड़ा। बड़ी समस्या नेपाल के प्रमुख कार्यकर्ता श्री माधव प्रसाद जी के पिता गंभीर रूप से बीमार हो गए सम्मेलन के पूर्व ही आई. सी. यू. में भर्ती थे और सम्मेलन समापन के दूसरे ही दिन उनका देहान्त हो गया।

वहां कार्य को गति देने में लगे स्वामी सम्पूर्णानन्दजी के भाई का देहान्त हो गया, उन्हें दो बार भारत आना पड़ा।

इन सब परिस्थितियों में भाई धर्मपालजी 4-5 दिन नेपाल रहे वहां स्थानीय कार्यकर्ताओं के साथ यहां से सम्पर्क कर करके कार्य की व्यवस्था की। फिर प्रधानजी, विनयजी और मैं सम्मेलन के पूर्व पहुँचे साथ ही दिल्ली सभा और मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा के कार्यकर्ताओं की एक मजबूत टीम पहुंची, जिसने मंच, ठहराने, भोजन, गायन आदि व्यवस्था को अपने हाथ में लिया। सभा प्रधानजी यद्यपि पूर्ण स्वस्थ नहीं थे, किन्तु उनकी लगन व एकमात्र उद्देश्य के कारण बिना आराम के भी पूर्ण रूप से कार्यक्रम की व्यवस्था में जुट गए, उनकी व्यवस्था व व्यस्तता से हम सब चिन्तित थे। निश्चित ही उनकी इसी दृढ़ता के कारण यह संभव हो सका। वही स्थिति भाई विनोद जी की थी, स्वास्थ्य पूर्ण रूप से साथ नहीं दे रहा था किन्तु सम्मेलन की लगन के कारण वहां जाकर कार्य में जुट गए।

सम्मेलन का अनूठा उपहार : आर्य समाज काठमाण्डू का अपना कोई भवन नहीं है। सत्संग आदि जो कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं वे किराए के मकान में हैं। वहां भी उनसे रिक्त करवाने का प्रयास चल रहा है। ऐसी स्थिति में जब मकान रिक्त हो जावेगा तो वहां गतिविधियां कैसे संचालित की जावेगीं, यह चिन्ता का विषय है।

किन्तु आर्यो ने काठमाण्डू की गंभीर समस्या को अपनी समस्या मानकर भूमि व भवन के लिए धन एकत्रित करने की घोषणा करके एक अनूठा उपहार काठमाण्डू को देने का सिलसिला प्रारंभ किया। लगभग एक करोड़ बीस लाख रुपयों की दान की घोषणा विभिन्न प्रान्तों, देशों के प्रतिनिधियों ने संस्थागत व व्यक्तिगत रूप से की।

इस प्रयत्न से उपस्थित आर्यजनों में प्रसन्नता की लहर दौड़ गई चहुंओर उत्साह दिखाई दे रहा था।

भारत में आयोजित आर्य महासम्मेलन के अतिरिक्त आयोजित सभी आर्य महासम्मेलनों में नेपाल का यह सम्मेलन सबसे विशाल, भव्य व प्रेरणास्पद रहा, यह वहां आने वाले प्रत्येक आर्य का मानना था।

विद्वानों के व्याख्यान : डॉ. सतीश प्रकाश अमेरिका, डॉ. प्रियव्रतदासजी, डॉ. सत्यपालसिंहजी, स्वामी सुमेधानन्दजी, योगी आदित्यनाथजी, डॉ. माधव प्रसादजी, आचार्य सनत कुमार जी, प्रो. ओमकुमार, श्री हरिभक्तजी सिरौला, श्री हरिश सचदेवा (न्यूजीलैण्ड), आचार्य ज्ञानेश्वरजी, श्री सत्यदेव प्रीतम (मॉरिशस), श्री विश्रुत आर्य (अमेरिका) हरीदेवजी।

कार्यालय सहयोगी व प्रमुख : दिल्ली से श्री योगेश जी, बृजेश आर्य, एस. पी. सिंह, सुखबीरजी, विरेन्द्र आर्य, धर्मदेव, श्री सन्दीप आर्य, अशोक आर्य, मध्य भारत से श्री दक्षदेवजी, आशीष आर्य, सुरेश आर्य, विनोद आर्य, शैलेन्द्र आर्य। सभी ने वहां जाकर कार्य को संभाला और पूरा सहयोग दिया।

- प्रकाश आर्य, सभा मन्त्री
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

आर्यसमाज के गीतों को बनाएं अपने मोबाइल की रिंग टोन एवं कॉलर ट्यून

(Download Mobile Ring Tune & CallerTunes)

मोबाइल ट्यन - रिंग टोन/कॉलर ट्यून को कई बार हम व्यक्ति विशेष की पहचान के लिए प्रयोग करते हैं। वहां हमारी कॉलर ट्यून/रिंग टोन ही हमारी पहचान होती है। तो आइए हम मिलकर अपने आपको महर्षि दयानन्द एवं आर्यसमाज को समर्पित करें और अपने मोबाइल में ऐसी ट्यून सैट करें कि आस-पास खड़ा कोई भी व्यक्ति हमें जान जाए कि हम आर्यसमाज के सदस्य हैं, महर्षि दयान्द सरस्वती जी के मानस पुत्र हैं। दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रयासों को कुछ सुप्रसिद्ध गीतों की ट्यन बनवाई गई है जोकि अनेक मोबाइल कम्पनियों द्वारा स्वीकार की गई हैं। आइए हम अपने पसन्दीदा गीत को अपनी पहचान बनाएं। नीचे दिए गए गीतों में से किसी भी गीत को अपनी ट्यून बनाने के लिए अपनी मोबाईल कम्पनी के निर्देशानुसार डायल/एस.एम.एस. करें। इनके अतिरिक्त अन्य गीतों के चयन के लिए सभा की वैबसाइट www.thearyasamaj.org पर लॉगऑन करें अथवा http://www.binacatunes.com/Home/Search_?keyword=dev+dayanand पर क्लिक करें।

'अब रस्ता कर दो खाली, आई फौज दयानन्द वाली'

airtel	AIRTEL	DIAL 543211 4686559	idea	Set Tune	DIAL 56789 5021678
BSNL	BSNL E & S	SMS BT 5021678 to 56700	BSNL	BSNL N & W	SMS BT 804056 to 56700
MTS	MTS	SMS CT 10545238 to 56700	vodafone	Vodafone	SMS BT 5021678 to 56789
uninor	Set Tune	DIAL 52222 2779051	TATA	TATA	SMS CT 5021678 to 543211
MTNL	MTNL	SMS PT 5021678 to 56789	AIRCEL	AIRCEL	SMS DT 804056 to 53000
RELIANCE	Set Tune	SMS CT 6312073 to 51234	uninor	Set Tune	DIAL 52222 5021678 to

'हे प्रभु हम तुझसे वर पावें, सकल विश्व को आर्य बनावें'

airtel	AIRTEL	DIAL 543211 4686560	idea	Set Tune	DIAL 56789 5021679
BSNL	BSNL E & S	SMS BT 5021679 to 56700	BSNL	BSNL N & W	SMS BT 804057 to 56700
MTS	MTS	SMS CT 10545239 to 56700	vodafone	Vodafone	SMS BT 5021679 to 56789
uninor	Set Tune	DIAL 52222 2779055	TATA	TATA	SMS CT 5021679 to 543211
MTNL	MTNL	SMS PT 5021679 to 56789	AIRCEL	AIRCEL	SMS DT 804057 to 53000
RELIANCE	Set Tune	SMS CT 6312074 to 51234	uninor	Set Tune	DIAL 52222 5021679 to

Glimpses of the SamaVeda

- Priyavrata Das

Continue from last issue :-

Simile

"O the much praised and opulent Soul, we the sense organs belong to you; we glorify you alone Accept our offerings. None other than you are entitled to receive our devotion. May you love and cherish our prayers as the mother-earth cherishes its creatures."

"May the poems of praise, heavenly, blissful, short and sweet, glorify the resplendent Lord and embrace the devotees just as women embrace men, their husbands free from defect, for the sake of their protection."

इमे त इन्द्र ते वयं पुरुष्टुत ये त्वारभ्य चरामसि प्रभूवसो।

न हि त्वदन्यो गिर्वणो गिरः सघत्क्षोणीरिव प्रति तद्धर्य नो वचः।। (Sv.373)

ime ta indra te vayam purustuta ye tvarabhya caramasi prabhuvaso.

na hi tvadanyo girvano girah saghatksoniriva prati taddharya no vacah..

अच्छा व इन्द्रं मतयः स्वर्युवः सध्रीचीर्विश्वा उशतीरनूषत।

परि ष्वजन्त जनयो यथा पतिं मर्यं न शुन्ध्युं मघवानमूतये।। (Sv.375)

Accha va indram matayah svaryuvah sadhricirvisva usatiranusata.

pari svajanta janayo yatha patim maryam na sundhyum maghavanam utaye..

The Bounties of Nature

"The sustaining bounties of Nature always reward those man who try to go up high in life's progress."

"O addorable God, may you distribute to Nature's agents the essence of our devout offerings and awaken in our hearts the wisdom revealed in the newest chants of hymns."

"when the showerer, the shining sun sends down the streams of rivers with mighty floods, the other nourishing divine elements of Nature also Join with him."

सोमः पूषा च चेततुर्विश्वासां सुक्षितीनाम्। देवत्रा रथ्योर्हिता।। (Sv.154)

Somah pusa ca cetatur visvasam suksitinam. devatra rathyorhita..

इममू षु त्वमस्माकं सनिं गायत्रं नव्यांसम्। अग्ने देवेषु प्र वोचः।। (Sv.28)

Imamu su tvamasmakarm sanim gayatram navyamsam. agne devesu pra vocah..

यदिन्द्रो अनयद्रितो महीरपो वृषन्तमः। तत्र पूषाभुवत्सचा।। (Sv.148)

yad indro anayad rito mahirapo vrsantamah. tatra pusabhuvat saca..

The Radiant Dawn

"O radiant dawn, awaken us today for simple riches in the like manner as you have awakened us in days of old. O dawn, nobly born and one sincerely praised for the gift of vigour, may you be kind to people, who are seekers of truth and weavers of knowledge."

"O dear daughter of heaven, who awakens men treading on the right path and who are purehearted, nobly born, and sincerely praised for the gift of vigour, may you be kind to people, who are seekers of truth and weavers of knowledge."

महे नो अद्य बोधयोषो राये दिवित्मती।

यथा चिन्नो अबोधयः सत्यश्रवसि वाय्ये सुजाते अश्वसूनृते।। (Sv.1740)

Mahe no adya bodhayoso raye divitmati.

yatha cinno abodhyah satyasravasi vayye sujate asvasunrte..

या सनीथे शौचद्रथे व्यौच्छो दुहितर्दिवः।

सा व्युच्छ सहीयसी सत्यश्रवसि वाय्ये सुजाते अश्वसूनृते।। (Sv.1741)

Ya sunithe saucad rathe vyauccho duhitar divah.

sa vyuccha sahiyasi satyasravasi vayye sujate asvasunrte..

To be Conti....

आओ संस्कृत सीखें

संस्कृत पाठ – 15 (अ): वाक्य बनाना

-आचार्य संदीप कुमार उपाध्याय

गतांक से आगे....

अब हम एक श्लोक का हिन्दी में अनुवाद करेंगे।

गतं पापं (पाप गया)
गतं दुखं (दुख गया)
गतं दारिद्रमेव च (और दारिद्र या गरीबी भी गयी)
आगतं (आ गया)
परमचौतन्यं (परम चौतन्य)
पुण्योहं (मैं पवित्र हो गया)
तव दर्शनात्। (तेरे दर्शन से)
अन्यथा (और कहीं भी)
शरणं (सहारा)
नास्ति (नहीं है)
त्वमेव (तुम ही)
शरणं (सहारे हो)
मम (मेरे)।

तस्मात् (इसलिये) कारूण्यभावेन (करुणा की भावना से) रक्ष रक्ष परमेश्वरी (हे परमेश्वरी! मेरी रक्षा करो, रक्षा करो)। इस अनुवाद को नीचे लिखे अनुसार सरल करके समझ सकते हैं।

''पाप गया, दुख गया और गरीबी भी चली गई। परम चैतन्य आ गया। तेरा दर्शन पाकर मैं पवित्र हो गया। तेरे सिवाय और कहीं भी मेरे लिये शरण (सहारा) नहीं है। इसलिये हे परमेश्वरी! मेरी रक्षा करो, मेरी रक्षा करो।''

संस्कृत कठिन भाषा नहीं है। थोड़ा सा अभ्यास करके हम जल्द ही सीख सकते हैं।

जैसे नीचे दो वाक्य हैं जिनके संस्कृत में अनुवाद दिये गये हैं।

वह कभी भी स्कूल नहीं जाता और न ही घर में पढ़ता।

संस्कृत- सः कदापि पाठशालां न गच्छति नहि गृहे पठति च।

परन्तु मैं हमेशा स्कूल जाता हूँ और घर में भी पढ़ता हूँ।

संस्कृत- परन्तु अहं सदा पाठशालां गच्छामि गृहे अपि पठामि च।

नोट-अब आगे के lessons में अनेक वाक्य बना कर संस्कृत में अनुवाद का अभ्यास करेंगे।

हिन्दी आर्य भाषा है और संस्कृत का सरली करण है। जो वर्तमान में आम लोगों की भाषा बन गई है। आशा है जो लोग इसमें interested हैं वे लोग बहुत कम समय में समझ सकेंगे। *– क्रमशः*

MDH **हवन सामग्री**
मात्र 90/- किलो
(5,10, 20 किलो की पैकिंग)
अब 1 किलो एवं आधा किलो की पैकिंग में भी
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
15 हनुमान रोड, नई दिल्ली - 1
मो. 9540040339

प्रेरक प्रसंग

तो सेवा कौन करेगा

निजाम राज्य में आर्यो ने जो बलिदान दिये व कष्ट सहे हैं, वे अपने-आपमें एक अद्वितीय इतिहास है। खेद है कि न तो निजाम राज्य के किसी सुयोग्य आर्य युवक ने इस इतिहास को सुरक्षित करने का सत्साहस दिखाया और न ही राज्य के बाहर के आर्यो ने और न सभाओं ने इधर विशेष ध्यान दिया है। पण्डित श्री नरेन्द्रजी इस दिशा में कुछ ठोस कार्य कर गये हैं।

निजाम की कोठी (किंग कोठी) की देखभाल करनेवाले एक व्यक्ति श्री राय ललिताप्रसादजी आर्य बन गये। वे बड़े मेधावी, साहसी, विनम्र, सेवाभाववाले, साहित्यिक प्रतिभावाले आर्य मिश्नरी थे। उच्च कोटि के वैद्य भी थे। प्लेग व हैजा के एक सुदक्ष चिकित्सक थे। लक्ष्य धन कमाना नहीं था, घर फूँक तमाशा देखनेवाले लेखराम के चरणानुरागी थे।

राज्य में जब-जब महामारी फैली राज्य के दिलजले आर्यवीर सेवा के लिए आगे निकले। श्री ललिताप्रसादजी सरकारी नौकर होते हुए आर्यसमाज के स्वयंसेवक के रूप में मुर्दो के शव कन्धे पर उठाकर सेवा कार्य में जुट जाया करते थे। प्लेग का नाम सुनकर ही लोग भाग खड़े होते थे। ललिताप्रसादजी अपने एकमात्र पुत्र 'देवव्रत' को साथ लेकर प्लेग के मुर्दो को उठाने चल पड़ते। श्री देवव्रत शास्त्री बम्बई को आज सारा आर्यजगत् जानता है।

1940 ई. में गुलबर्गा में प्लेग फैली तो सब जन नगर छोड़कर बाहर भागने लगे। आपको भी कहा गया कि चले चलो। आपका कथन था कि यदि वैद्य-डॉक्टर ही भाग गये तो सेवा कौन करेगा? आप प्लेग के रोगियों की सेवा करते हुए स्वयं भी इसी रोग से चल बसे।

आर्यजन! ऐसी पुण्य आत्मा को मैं यदि रक्तसाक्षी (हुतात्मा) की संज्ञा दे दूँ तो कोई अत्युक्ति न होगी। दुर्भाग्य की बात तो यह है कि हमारे मंच से ऐसे प्रणवीरों के उदाहरण न देकर बीरबल-अकबर व इधर-उधर की कल्पित कहानियाँ सुनाकर वक्ता लोग अपने व्याख्यानों की रोचकता बनाते हैं।

यदि हम आर्यजाति को बलवान् बनाना चाहते हैं तो हमें अतीत काल के और आधुनिक युग के तपस्वी, बलिदानी, ज्ञानी, शूरवीरों की प्रेरणाप्रद घटनाएँ जन-जन को सुनाकर नया इतिहास बनाना होगा।

आर्यसमाज भी अन्य हिन्दुओं की भाँति अपने शूरवीरों का इतिहास भुला रहा है। पण्डित लेखराम, स्वामी श्रद्धानन्द, महात्मा नारायण स्वामी, स्वामी स्वतन्त्रानन्द, पण्डित मुरारीलालजी, स्वामी दर्शनानन्द, पण्डित गणपतिशर्मा, पण्डित गंगाप्रसाद उपाध्याय, पण्डित नरेन्द्रजी सरीखे सर्वत्यागी महापुरुषों के जीवन-चरित्र कितने छपे हैं? सार्वदेशिक या प्रान्तीय सभाओं ने इनके चरित्र छपवाने व खपाने में कभी रुचि ली है? उपाध्यायजी सरीखे मनीषी का खोजपूर्ण प्रामाणिक जीवन-चरित्र मैंने ही लिखा है, किसी भी सभा ने एक भी प्रति नहीं ली। वैदक धर्म के लिए छाती तानकर कौन आगे आएगा? प्रेरणा कहाँ से मिलेगी?

साभार :
तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी

तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी : पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, दिल्ली में उपलब्ध है। पुस्तक प्राप्ति हेतु आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।

आर्य समाज जे.वी.टी.एस. गार्डन का वार्षिकोत्सव सम्पन्न

आर्य समाज जे.वी.टी.एस. गार्डन, छत्तरपुर नई दिल्ली का 14वां वार्षिकोत्सव 11 से 13 नवम्बर 2016 के मध्य आयोजित किया गया। कार्यक्रम के अन्तर्गत अथर्ववेद पारायण एवं गायत्री महायज्ञ का आयोजन बड़े धूमधाम से सम्पन्न हुआ।

- ओम प्रकाश आर्य, मंत्री

चुनाव समाचार

आर्य उप-प्रतिनिधि सभा आगरा

प्रधान - श्री आर्य सत्यदेव गुप्ता
मन्त्री - श्री बृजराज सिंह परमार
कोषाध्यक्ष-श्री राजीव दीक्षित

आर्य समाज मालवीय नगर का 65वां वार्षिकोत्सव

आर्य समाज मालवीय नगर दिल्ली दिनांक 24 से 27 नवम्बर के मध्य अपना 65वां वार्षिकोत्सव आयोजित कर रहा है। समारोह के अन्तर्गत चतुर्वेद शतकम व स्त्री आर्य महिला सम्मेलन, वेद सम्मेलन का आयोजन किया जाएगा।

-प्रमोद पाठक, मन्त्री

वैदिक ज्ञान मेला का आयोजन

आर्य महिला समाज उन्नाव द्वारा18 से 20 नवम्बर तक वैदिक ज्ञान मेला का आयोजन किया जा रहा है। इसमें श्री रवीन्द्र, श्री जलेश्वर मुनी, श्रीमती रंजना भी उपदेश व भजन प्रस्तुत करेंगे।

- प्रवेश तुली, मंत्राणी

ऋषि बोधांक का प्रकाशन

प्रतिवर्ष ऋषि बोधोत्सव के अवसर पर टंकारा समाचार का ऋषि बोधांक प्रकाशित किया जाता है। आगामी बोधोत्सव 23 से 25 फरवरी 207 को समारोह पूर्वक आयोजित किया जा रहा है और इसी अवसर पर 'टंकारा समाचार' का ऋषि बोधांक प्रकाशित होगा। आपसे प्रार्थना है कि आप अपने सारगर्भित अप्रकाशित लेख एवं कविता 15 जनवरी तक भिजवाकर कृतार्थ करें। लेख वेद, स्वामी दयानन्द, योग स्वास्थ्य आदि एवं अन्य जन उपयोगी प्रेरणादायक विषयों पर ही सीमित हों। ऐसा निर्णय किया है कि प्रकाशनार्थ सामग्री टाईप की हुई 2/3 पृष्ठों से अधिक न हो, तो सुविधाजनक रहेगा। आप प्रकाशनार्थ सामग्री ई मेल पर ''वॉकमेन चाणक्य'' टाईप में कम्पोज करके भी भिजवा सकते हैं। इसके लिए मैं आपका अत्यन्त आभारी रहूंगा।

-अजय सहगल, सम्पादक,टंकारा समाचार
ए-419 डिफेन्स कालोनी, नई दिल्ली-24, मो. 98100356558

आर्य समाज ए.सी. ब्लॉक टैगोर गार्डन का 50वां वार्षिकोत्सव

आर्य समाज मन्दिर (ए.सी. ब्लॉक) टैगोर गार्डन, नई दिल्ली का 50वां वार्षिकोत्सव दिनांक 21 से 27 नवम्बर 2016 को आयोजित किया जा रहा है। जिसके अन्तर्गत सामवेद यज्ञ, वेद कथा, भजन संगीत, आर्य महिला सम्मेलन, वेद सम्मेलन का आयोजन किया जाएगा। **- जे.एन. मल्होत्रा**

एक विचारोत्तेजक संगोष्ठी

सामाजिक सजगता के लिए प्रख्यात शिक्षाविदों एवं दार्शनिकों का तर्कपूर्ण उद्बोधन

37 विभिन्न सामाजिक एवं धार्मिक संस्थानों तथा रेजिडेंट वेलफेयर एसोसियेशन्स (दक्षिण दिल्ली) का एक संयुक्त प्रयास

दिनांक 27 नवम्बर 2016 (रविवार) सायं 3:30 बजे से 8:00 बजे

स्थान : आर्य ऑडिटोरियम, चंद्रवती स्मारक ट्रस्ट, देसराज परिसर, (इस्कान मन्दिर के पास) सी-ब्लाक, ईस्ट ऑफ कैलाश, नई दिल्ली

- ईश्वर से प्रार्थना करने का क्या लाभ है?
- ईश्वर हैं तो वह अपना काम करें, हम अपना काम कर रहे हैं।
- ईश्वर हमारे कर्म का फल देंगे, तो हम अपना कर्म, परिश्रम करें!-प्रार्थना किस लिए?
- अगर प्रार्थना सुनकर उसके बदले में ईश्वर कुछ देते हैं तो यह चाटुकारिता है और कर्मफल के नियम के विरुद्ध है।
- अगर किसी तरह यह निर्णय हो जाए कि प्रार्थना करना आवश्यक और उपयोगी है तो फिर सवाल उठता है कि कैसे करें?
- अलग-अलग विश्वास के आधार पर लोग अलग-अलग तरह से प्रार्थना करते हैं तो इनमें से कौन सी विधि ठीक है? या सबसे ज्यादा ठीक है? या सभी समान रुप से ठीक हैं?
- प्रार्थना से जुड़े इस तरह के विभिन्न उलझे हुए प्रश्नों पर विचार-चर्चा आयोजित है जिसमें अलग-अलग धार्मिक समुदायों के विद्वान वक्ता आमंत्रित किए गए हैं। अपने व्यस्त जीवन में से समय निकाल कर इस आयोजन में सम्मिलित हों और विचारों की एक क्रांतिपूर्ण दिशा प्राप्त करें।

संगोष्ठी अध्यक्ष
प्रोफेसर डॉ. शशि प्रभा कुमार
- पूर्व उपकुलपति, साँची विश्वविद्यालय, भोपाल

पैनल के सदस्य
उद्घाटन सम्बोधन
डॉ. महेश विद्यालंकार
- एसोसिएट प्रोफेसर (सेवानिवृत्त), दिल्ली विश्वविद्यालय

हिन्दू दर्शन
स्वामी प्रज्ञानन्द जी महाराज
संस्थापक परमाध्यक्ष
- सॉई प्रज्ञाधाम, साकेत, नई दिल्ली

इस्लाम दर्शन
प्रो. सैय्यद रज़ि अहमद कमाल
- इस्लामिक स्टडिज़, ज़ामिया मिलिया इस्लामिया

ईसाई दर्शन
प्रो. (डॉ.) विक्टर एडविन एस जे
- विद्याज्योति कॉलेज ऑफ थीयोलॉजी

तुलनात्मक परिप्रेक्ष्य
प्रो. (डॉ.) मदन मोहन वर्मा
- संस्थापक इंटरफेथ संस्थान

वैदिक दर्शन
डॉ. वागीश आचार्य
- प्राचार्य, आर्ष गुरुकुल महाविद्यालय एटा, उत्तर प्रदेश

डॉ. विनय विद्यालंकार
- एसोसिएट प्रोफेसर (संस्कृत) राजकीय पी जी कॉलेज, हल्द्वानी, नैनीताल एवं वरिष्ठ उपाध्यक्ष, आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तराखण्ड

आशीर्वाद : श्रीमती संतोष मुंजाल-हीरो ग्रुप, स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती-प्राचार्य, गुरुकुल गौतम नगर, नई दिल्ली

मुख्य अतिथि : डॉ अशोक के. चौहान-संस्थापक अध्यक्ष, एमिटी विश्वविद्यालय एवं शिक्षण संस्थान, तथा चेयरमैन, ए.के.सी. ग्रुप
डॉ अमिता चौहान-चेयरपर्सन, एमिटी इंटरनेशनल स्कूल्स

विशिष्ट अतिथि : श्री रामनाथ सहगल, श्री योगेश मुंजाल, श्री सुमन कान्त मुंजाल, श्री धर्मपाल आर्य, श्री विनय आर्य, श्री दर्शन अग्निहोत्री, श्री अजय सहगल, श्री सौरभ भारद्वाज, श्री के.सी. तनेजा, श्री रजनीश गोयनका, श्री आनन्द चौहान, श्री योगराज अरोड़ा, श्री मनीष विदेह, श्रीमती बाला चौधरी, डॉ. मधु गुप्ता, श्री नीतिन्जय चौधरी, श्री गुनमीत सिंह।

❖ कृपया अपना अग्रिम पंजीकरण करने के लिए **श्री अजय कुमार (9911111989), श्री सुरेन्द्र प्रताप (9953782813), कर्नल गोपाल वर्मा (9811121242),** से संपर्क करें जिससे उचित व्यवस्था की जा सके। ❖ कृपया 3:15 बजे तक अपना स्थान ग्रहण करें। ❖ ऑडिटोरियम परिसर में पार्किंग की समुचित व्यवस्था है।
❖ इस कार्यक्रम के लिये कृपया "आर्य समाज जी.के.-1" को उदारता पूर्वक सहयोग दें। आर्य समाज जी.के.-1 को दिया गया दान आयकर अधिनियम 1961 की धारा 80-जी (5) के अंतर्गत आयकर छूट के योग्य है।

संयोजक : श्री राजीव चौधरी (9810014097)

मैं आर्य समाजी कैसे बना?

आर्यसन्देश के समस्त पाठकों की सूचनार्थ है कि 'आर्य सन्देश' में एक नया स्तम्भ '**मैं आर्य समाजी कैसे बना**' प्रारम्भ किया गया है। इस स्तम्भ में उन सभी महानुभावों का परिचय प्रकाशित किया जाएगा जो किसी की प्रेरणा/विचारधारा से आर्य समाजी बने हैं।

यदि आपके साथ भी कुछ ऐसा हुआ है तो आप भी अपना प्रेरक प्रसंग अपने फोटो के साथ हमें लिखें या aryasabha@ yahoo.com पर ईमेल करें। हमारा पता है-

'सम्पादक', आर्य सन्देश, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001

सुख समृद्धि हेतु यज्ञ कराएं

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की योजना 'घर-घर-यज्ञ, हर-घर-यज्ञ' राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली में उत्साह पूर्वक नित्य निरंतर प्रगति की ओर है। वैदिक वाङ्मय में यज्ञ की विशेष महत्ता का वर्णन मिलता है। यज्ञ के द्वारा संसार के सभी ऐश्वर्य मानव को प्राप्त होते हैं। यजुर्वेद में कहा गया है कि 'अयं यज्ञो भुवनस्य नाभि:' अर्थात् यह यज्ञ संसार का केन्द्र बिन्दु है, अर्थात् विश्व का आधार है। शतपथ ब्राह्मण में कथन है कि 'स्वर्ग कामो यजेत्' अर्थात् हे मनुष्य यदि तू संसार के सुख प्राप्त करना चाहता है तो यज्ञ कर। आप भी अपने घर-परिवार में यज्ञ कराने के लिए सम्पर्क करें- ***- सत्यप्रकाश आर्य 9650183335***

आवश्यकता है
मैनेज़र/केयरटेकर की

धनश्री आसाम के 'महाशय धर्मपाल एम.डी.एच. दयानन्द आर्य विद्या निकेतन (सी.बी.एस.ई.) स्कूल' के लिए मैनेज़र/केयरटेकर की आवश्यकता है। आवास सुविधा, वेतन योग्यतानुसार देय। आजीवन पृष्ठभूमि एवं वानप्रस्थी पूर्ण सक्षम (अनुभवी महानुभाव को प्रथमिकता) अपना विवरण aryasabha @yahoo.com पर मेल करें या चेयरमैन, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001 पर भेजें। ***- महामन्त्री***

मैनेज़र/केयरटेकर की आवश्यकता है

अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम संघ बामनिया मध्य प्रदेश के 'महाशय धर्मपाल एम.डी.एच. दयानन्द आर्य विद्या निकेतन आवासीय (सी.बी.एस.ई.) स्कूल' के लिए मैनेज़र/केयरटेकर की आवश्यकता है। आवास सुविधा, वेतन योग्यतानुसार देय। आजीवन पृष्ठभूमि एवं वानप्रस्थी पूर्ण सक्षम (अनुभवी महानुभाव को प्रथमिकता) अपना विवरण aryasabha@yahoo.com पर मेल करें या चेयरमैन, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001 पर भेजें। ***- महामन्त्री***

क्या आप चाहते हैं कि-

आर्यसन्देश को प्रचारित प्रसारित किया जाए?
आपके चाहने वालों को भी प्राप्त हो?
आपके विदेश में रहने वाले दोस्तों को भी प्राप्त हो?
आपके मित्रों-रिश्तेदारों को भी प्राप्त हो जो इसे पढ़ने की रूचि रखते हों?

यदि हां! तो

जिन मित्रों को आर्यसन्देश पढ़ाना चाहते हैं उनकी ईमेल आई.डी. लिखकर हमें डाक से भेजें, ईमेल करें या 9540040322 पर एस.एम.एस. करें। उन्हें आर्यसन्देश प्रति सप्ताह इंटरनेट द्वारा भेजा जाता रहेगा। - सम्पादक

आर्यजन ध्यान दें

समस्त आर्य परिवारों से निवेदन है कि यदि आपके कोई सम्बन्धी/रिश्तेदार/ परिचित या आर्य विचारधारा से प्रेरित कोई व्यक्ति भारत के अन्दमान-निकोबार, लक्ष्यद्वीप या गोवा में रहते हैं अथवा नौकरी करते हैं तो कृपया उनका नाम, पता, दूरभाष तथा ईमेल हमें भेजने की कृपा करें ताकि उनसे सम्पर्क करके वहां आर्यसमाज की स्थापना का प्रयास किया जा सके।-***मन्त्री, सार्वदेशिक सभा***

ईमेल : aryasabha@yahoo.com

वैदिक शगुन लिफाफे

महर्षि दयानन्द के चित्र एवं वेदमन्त्रों सहित सुन्दर डिजाइनों में

सिक्के वाले	बिना सिक्के
मात्र 500/-रु. सैंकड़ा	मात्र 300/-रु. सैंकड़ा

प्राप्ति स्थान : -दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली
दूरभाष : 011-23360150, 09540040339

शोक समाचार

माता सरला सिंघला का निधन

आर्यसमाज दिलशाद गार्डन की वरिष्ठ सदस्या माता सरला सिंघला धर्मपत्नी श्री नवीन सिंघला जी का दिनांक 13 नवम्बर, 2016 को निधन हो गया।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्यसन्देश परिवार के समस्त अधिकारी एवं कार्यकर्त्ता परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि वे दिवंगत आत्मा को सद्गति एवं शोक-संतप्त परिजनों को इस दारुण दु:ख को सहन करने की शक्ति, सामर्थ्य एवं उनके पदचिह्नों पर चलने की प्रेरणा प्रदान करे। -सम्पादक

साप्ताहिक आर्य सन्देश

सोमवार 14 नवम्बर, 2016 से रविवार 20 नवम्बर, 2016

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15–हनुमान् रोड, नई दिल्ली–110001

दिल्ली पोस्टल रजि.नं0 डी.एल.(एन.डी.)–11/6071/2015–2017

नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने का दिनांक 17/18 नवम्बर, 2016

पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं0 यू0(सी0) 139/2015–2017

आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 16 नवम्बर 2016

बाय बादी–वायु विकार

किसी भी प्रकार का वायु विकार या बदहजमी होने पर अपनाएं इन नुस्खों को–

1. सौंठ अर्क एक तिहाई कप लेकर उसमें आधा कप पानी मिलाकर भोजन के बाद दोनों समय पीयें।

2. सौंठ, गोखरू 50–50 ग्राम दरदरा कूट कर 5 पुडिया बना लें। रात को एक पुडिया 200 ग्राम पानी में उबालें। एक चौथाई रह जाने पर छान कर कम गर्म पीयें।

3. राई पिसी 4–4 ग्राम गुड में मिलाकर प्रात: सायं कम गर्म पानी से लें।

4. सुरंजान 40 ग्राम, सनाय 20 ग्राम, सौंठ, नेत्रवाला, सफेद जीरा, पीपल 10–10 ग्राम कूट छानकर 100 ग्राम शहद में मिलाकर एक–एक चम्मच प्रात: सायं गर्म पानी से लें।

5. गुठली निकला एक छुआरा, जायफल 3, खोपरा 30 ग्राम, सेंधा नमक डेढ़ ग्राम, कूट छानकर इसकी तीन पुडिया बनाएं। तीन दिन तक एक–एक पुडिया गर्म पानी से प्रात: लें। इससे वायफिरंग ठीक हो जाती है।

6. अजवायन 20 ग्राम, सेंधा नमक, काला नमक, भुना सुहागा 10–10 ग्राम सत पुदीना एक रत्ती कूट छानकर 5–5 ग्राम दोनों समय भोजन के बाद गर्म पानी से लें।

7. सौंफ 50 ग्राम, काला नमक 10 ग्राम, काली मिर्च 5 ग्राम कूट छान कर दोनों समय 5–5 ग्राम भोजन के बाद गर्म पानी से लें।

8. अदरक का रस 10 ग्राम शहद मिलाकर प्रात: सायं दें।

9. सौंठ, अजवायन 10–10 ग्राम काला नमक तीन ग्राम पीस लें। 2–2 ग्राम पानी से प्रात: सायं दें।

10. लौंग, सौंठ, काली मिर्च, पीपल, अजवायन 10–10 ग्राम नमक लाहौरी, मिश्री 50–50 ग्राम कूट छान कर नीबू के रस में भिगोएं। सूखने पर 5–5 ग्राम गर्म पानी से भोजन के बाद दें।

प्रतिष्ठा में,

सार्वदेशिक सभा के निर्देशन में दिल्ली सभा द्वारा

17वां वैवाहिक परिचय सम्मेलन

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के निर्देशन में दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्त्वावधान में **17वां परिचय सम्मेलन** का आयोजन 15 जनवरी, 2017 को आर्यसमाज अशोक विहार फेज–1 दिल्ली में प्रात: 10 बजे से किया जाएगा।

समस्त आर्य परिवारों से अनुरोध है कि अपने विवाह योग्य पुत्र–पुत्रियों के आर्य परिवारों से सम्बन्ध जोड़ने के लिए परिचय सम्मेलन में शीघ्रातिशीघ्र पंजीकरण कराने का कष्ट करें। पंजीकरण फार्म पूर्ण विवरण के साथ **'दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा'** के नाम 300/– रुपये का डिमाण्ड ड्राफ्ट संलग्न भेजें अथवा 'दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा' के नाम **एक्सिज बैंक** खाता संख्या **910010001816166** करोल बाग शाखा में जमा कराकर रसीद फार्म के साथ भेंजे। आवेदन पत्र दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15– हनुमान रोड़, नई दिल्ली–1 के पते पर कार्यालय में सम्मेलन की तिथि से 15 दिन पूर्व अवश्य प्राप्त हो जाने चाहिएं जिससे प्रत्याशी का विवरण पंजीयन पुस्तिका में प्रकाशित किया जा सके। पंजीकरण फॉर्म को सभा की वेबसाईट **www. thearyasamaj.org** से डाउनलॉड किया जा सकता हैं तथा **www.matrimony. thearyasamaj.org** पर **ऑनलाईन भरकर पंजीकरण** भी कराए जा सकते हैं। अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें–

अर्जुनदेव चद्दा, राष्ट्रीय संयोजक (मो. 9414187428)

एस. पी. सिंह, संयोजक, दिल्ली (मो. 9540040324)

खुशखबरी! खुशखबरी!! खुशखबरी!!!

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा

वर्ष 2017 कैलेण्डर प्रकाशित

वर्ष 2017 कैलेण्डर

मूल्य 1200/–रुपये सैंकड़ा

200 से अधिक प्रतियां के आर्डर देने पर नाम से प्रकाशित करने की सुविधा अतिरिक्त शुल्क (300/– सैकड़ा) पर उपलब्ध है। सम्पर्क करें–

व्यवस्थापक, प्रकाशन विभाग
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा (पं.), 15, हनुमान रोड, नई दिल्ली–1
दूरभाष : 011–23360150, 09540040339

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक श्री धर्मपाल आर्य द्वारा हरिहर प्रैस, ए–29/2, नरायणा औद्यो. क्षेत्र–1, नई दिल्ली–28 से मुद्रित एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15–हनुमान रोड, नई दिल्ली–1; फोन : 23360150; 23365959; E-mail : aryasabha@yahoo.com; Web : www.thearyasamaj.org से प्रकाशित

सम्पादक : धर्मपाल आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : शिवकुमार मदान सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ० ओमप्रकाश भटनागर, एस. पी. सिंह